Paper-C2, unit-4

# * शिक्षा में असमानता *

शिक्षा में असमानता से तात्पर्य यह है कि जाति, धर्म, भाषा, लिंग एवं सम्प्रदाय आदि के आधार पर भेदभाव करना एवं समाज में सभी व्यक्तियों को विकास के समान अवसर न देना तथा उनके साथ भेदभाव करना। वैसे तो भारतीय संविधान में समाज के सभी व्यक्तियों के लिए समान अधिकार एवं समान कर्तव्य निश्चित है और सभी को अपना विकास करने के समान अवसर प्रदान करने की घोषणा है, परन्तु व्यवहार में सबमें आज भी असमानता है।

## * प्राइवेट स्कूलों के संदर्भ में असमानता :-

जैसा कि हम जानते है कि भारत में सरकारी विद्यालयों में शैक्षिक असमानता दृष्टिगोचर होती है। वहीं अनवरत प्राइवेट विद्यालयों में भी देखी जा रही है। हम जानते है कि 1990 के दशक में भारत में शिक्षा के निजीकरण की नींव पड़ी और इसका उद्देश्य यही था कि समाज के सभी बच्चों तक शिक्षा को उपलब्ध कराना। लेकिन जैसे-जैसे

समय होता गया वैसे वैसे सरकारी विद्यालयों की तरह प्राइवेट संस्थानों में भी शैक्षिक असमानता व्याप्त होती गई।

हम देखते है कि उच्च कोटि के प्राइवेट स्कूल के शैक्षिक संस्थाएँ वहीं तक पहुँच पाती है जिसके पास धन की उपलब्धी होती है, तथा ये सुविधाएँ गरीब परिवार के बच्चों तक नहीं पहुँच पाती है। यह प्राइवेट स्कूलों की मुख्य शैक्षिक असमानता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों का अभाव, समाज में धन का अभाव, प्रबंधतंत्र के धनोपार्जन की ललक, सम्पूर्ण शैक्षिक सुविधाओं को सभी प्राइवेट स्कूलों में उपलब्ध न होना आदि मुख्य तथ्य है, जिसके कारण प्राइवेट संस्थानों में शैक्षिक असमानता व्याप्त है।

## * प्राइवेट विद्यालयों में शैक्षिक असमानता के कारण :-

1. आर्थिक कारण
2. प्रबंध तंत्र का हस्तक्षेप
3. रूढ़िवद्धता
4. सुविधाओं में असमानता
5. सरकार द्वारा अनुदान देने में भेदभाव
6. विद्यालयों की स्थिति।

* शैक्षिक असमानता को दूर करने के उपाय :

1. आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना
2. राजनैतिक हस्तक्षेप को दूर करना
3. सामाजिक कुरीतियों एवं रूढ़िवादिता को दूर करना।
4. भौगोलिक स्थितियाँ।
5. लैंगिक असमानता के कारण
6. शैक्षिक सुविधाओं का समान रूप से वितरण
7. सरकार द्वारा अनुदान देने में भेदभाव को दूर करना।

* ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय :

भारत को गाँवों का देश कहा जाता है, आज भी भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास कर कृषि पर निर्भर है लेकिन आज के समय में नगरीकरण की प्रक्रिया अपने उच्चतर स्तर पर है। इस प्रकार शैक्षिक सुविधाओं में भी हम ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में अंतर देख सकते हैं। भारत के प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों जिनको ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र संचालित करते हैं, में गुणों एवं सुविधाओं में आज भी अंतर

देखने को मिलता है। ग्रामीण एवं शहरी स्कूलों की परस्पर तुलना में उपलब्ध करायी गयी सुविधाओं में एक विशाल अंतर है। भारत में ग्रामीण शिक्षा की हालात में सुधार तो हो रहा है लेकिन इन स्कूलों की स्थिति अभी भी बहुत खराब है। यहाँ कुछ ही स्कूल ऐसे है जहाँ बच्चों को सुविधाएँ प्राप्त है। अभी भी ज्यादातर शिक्षक अनुपस्थित रहते है और ग्रामीण विद्यालयों में अध्यापकों का पलायन चल रहा है।

* भारत में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों का तुलनात्मक अध्ययन :-

1. शहरों एवं कस्बों में बहुत से स्कूल पर इनकी संख्या ग्रामीण क्षेत्रों में कम है।

2. स्कूल आने-जाने की सुविधाएँ शहरों में अधिक है जबकि आज भी अधिकांश गाँवों में इसका अभाव पाया जाता है।

3. बेसिक सुविधा जैसे- शुद्ध पीने का पानी, शौचालय आदि व्यवस्था शहरी परिवेश में उपलब्ध होता है लेकिन ग्रामीण परिवेश में आज भी इसकी सुविधा कहीं-कहीं उपलब्ध नहीं है।

4. ग्रामीण स्कूलों में शिक्षा का स्तर आधुनिकता से दूर है लेकिन शहरी स्कूल आधुनिकता की ओर अग्रसर है।

5. Computer शिक्षा को शहरी क्षेत्रों प्रमुखता दी जाती है वहीं गाँवों में कम्प्यूटर ट्रेनिंग देने वालों की सुविधा कम है।

6. शहरी विद्यालय में कक्षा के समय Audio conferencing or video conferencing के द्वारा प्राप्त किया जाता है जबकि यह ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध नहीं कराया जाती है।

7. शहरी स्कूलों के ढाँचे आधुनिक एवं नवीन है ग्रामीण स्कूलों की तुलना में, ग्रामीण स्कूलों में अधिकांशतः पाठ्यक्रम कोर्स के अलावा बच्चों को अन्य गतिविधियों जैसे – पाठ्य सहगामी क्रिया, खेल प्रतियोगिता आदि को सम्मिलित नहीं किया जाता है जो कि इस तरह की गतिविधियाँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

निष्कर्ष ⟷ भारत में ज्यादातर आबादी आज भी गाँवों में निवास करती है, इसलिए भारत में ग्रामीण शिक्षा का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है।

* ग्रामीण विद्यालय में शैक्षिक असमानता के कारण :-

1. computer शिक्षा के क्षेत्र में असमानता -
2. भौगोलिक स्थिति का प्रभाव
3. योग्य शिक्षक का अभाव
4. परिवार की उदासीनता
5. सहायक सामग्री का अभाव -

शैक्षिक असमानता को दूर करने के उपाय :-

1. अभिभावक जागरूकता अभियान
2. लैंगिक असमानता को दूर करना
3. शिक्षा के अधिकार अधिनियम को लागू करना।
4. भौगोलिक स्थिति के अनुसार प्रबंध करना।